

एक एव हितार्थाय — बह्वो ऽत्र विपत्तये PĀṆKĀT. III, 77. IV, 19. अस्म-
दर्थाय R. 3, 73, 32. — अर्थे gerade so verbunden: गोब्राह्मणस्य चैवार्थे M.
8, 95. 7, 14. BHAG. 1, 33. BRĀHMAN. 1, 27. PĀṆKĀT. 220, 19. HIT. I, 62. ÇĀK.
88. रामलक्ष्मणयोरर्थे बतुते वर्ये R. 1, 70, 44. 72, 6. एतास्तिन्नस्तु भार्यार्थे
नोपपच्छेत्तु बुद्धिमान् nehme nicht zur Frau M. 11, 172. विक्रीणीषे सुतं
यदि पशोरर्थे (als Opferthier) Viçv. 11, 13. कुटुम्बार्थे M. 8, 166. 167. 169. 10,
62. 11, 79. BHAG. 1, 9. DRAUP. 1, 4. N. 1, 6. 4, 16. 12, 20. 19, 4. R. 3, 73, 35.
PĀṆKĀT. I, 230. HIT. I, 38. VID. 272. जनन्या रत्नसेन्नेा ऽथ मोतार्थे (um
Befreiung) तव याचितः R. 6, 10, 27. Nach Vor. 3, 36 haben अर्थेन (mit
dem instr.) und अर्थस्य (mit dem gen.) dieselbe Bedeutung. Vgl. अर्थतम्.
— 2) Grund, Veranlassung, Ursache H. an. 2, 211. MED. th. 2. अतो
ऽर्थात् aus diesem Grunde M. 2, 213. केनचिदर्थेन aus irgend einer Ver-
anlassung N. 13, 13. अलुप्तश्च मुनेः क्रियार्थः Mittel zum Opfer RAGH. 2,
55. — 3) Vortheil, Nutzen: अर्थानर्थो M. 8, 24. क्षेत्राणामर्थः M. 9, 52. 51.
यावानर्थ उदपाने सर्वतः संस्रुतोदके BHAG. 2, 46. परार्थ RAGH. 1, 29. Häufig
in Verbindung mit काम Begierde und धर्म Tugend. Diese drei Motive
der Handlungen bilden den त्रिवर्ग AK. 2, 7, 57. H. 1382. M. 12, 38. BRĀH-
MAN. 1, 16. धर्मकामार्थान् M. 7, 151. 26. R. 1, 3, 4. कामार्थो M. 2, 224. R. 1, 7,
12. = अर्थकामो P. 2, 2, 34, VArt. 8 (vgl. gaṇa राजदत्तादि). M. 4, 176.
KUMĀRAS. 3, 38. अर्थकामेषसक्तानाम् M. 2, 13. धर्मावाप्तिं च विपुलामर्थकामं
च केवलम् R. 2, 86, 6. धर्मार्थो M. 2, 112. 224. 4, 92. 8, 74. = अर्थधर्मो P.
2, 2, 34, VArt. 8 (vgl. gaṇa राजदत्तादि). M. 7, 46. Dazu gesellt sich biswei-
len noch मोक्ष die letzte Befreiung AK. 2, 7, 57. H. 1382. HIT. Pr. 23. I, 37.
Bei einem Glückwunsch (आशिषि) mit dem dat. oder gen. P. 2, 3, 73.
अर्थो देवदत्ताय oder देवदत्तस्य Sch. — 4) Sache, Gegenstand, Ding, Object
AK. 3, 4, 88. TRIK. 3, 3, 195. H. 1384, Sch. an. 2, 211. MED. th. 2. अथ च्यवान्
उत्तवीत्यर्थम् vermag Etwas RV. 10, 59, 1. न निर्वद्धा उपसर्गा अर्थविराजः
Nir. 1, 3, 11. 15. 16. 19. स न मन्येतागन्तूनिवार्थान्देवतानाम् 7, 4. इन्द्रियेभ्यः
परा ह्यर्थो अर्थेभ्यः परं मनः KATHOP. 3, 10. IÇOP. 8. न — सूक्ष्ममप्यर्थमुत्स-
जेत् M. 8, 170. अर्थं भित्तिला 11, 25. 42. 8, 180. 187. अर्थो हि कन्या परकीय
एव ÇĀK. 97. सुखार्थेषु M. 6, 26. इन्द्रियार्थेषु 4, 16. 11, 44. BHAG. 2, 58. R. 1,
9, 4. अभीप्सितानामर्थानाम् M. 7, 204. 8, 53. ÇĀK. 61, 17. KUMĀRAS. 7, 71.
तमेवार्थम् (dasselbe) अभाषतेव RAGH. 2, 51. संगीतार्थं musikalischer Ap-
parat MEGH. 57. Euphemistisch für den penis: तस्यामर्थं निष्ठाप्य ÇAT.
Br. 14, 9, 4, 8. 20 = Bṛh. Âr. Up. 6, 4, 9. 21 (an beiden Stellen: निष्ठाप्य).
— 5) Gut, Besitz, Reichthum, Vermögen, Geld AK. 2, 9, 91. 3, 4, 88.
H. 192. an. 2, 211. MED. th. 2. अर्थस्य संप्रहे च — व्यये चैव M. 9, 11.
4, 18. 5, 106. 7, 124, 157. 8, 47. fgg. सन्पयार्थसमाकर्तृ 7, 60. अर्थे (bei den
Finanzen) निपुञ्जीत 62. यस्यार्थास्तस्य मित्राणि PĀṆKĀT. I, 3. सर्वान्परित्य-
जेदर्थान्स्वाध्यायस्य विरोधिनः M. 4, 17. 15. 7, 106. RAGH. 1, 7. अर्थलाभ
PĀṆKĀT. 7, 10. HIT. Pr. 13. अर्थव्यय H. 387. अर्थानो प्रयोगः (vgl. अर्थप्रयोग)
das Ausleihen von Geld TRIK. 2, 9, 1. — 6) Sache, Angelegenheit AK. 3,
4, 88. H. an. 2, 211. MED. th. 2. येन हेवार्थेन पुरुषश्चेत्तं हेव वेदत् KĀND.
Up. 5, 11, 6. गृहार्थः M. 2, 67. ते सर्वे अर्थेष्वमीमांस्ये 2, 10. स्वार्थसाधनतत्पर
4, 196. 2, 100. RAGH. 1, 19. KATHĀS. 13, 59. स्वार्थचित्तक M. 7, 121. अर्थसि-
द्धि 215. R. 2, 50, 5. RAGH. 2, 21. KATHĀS. 2, 63. सर्वसिद्धार्य M. 1, 83. सिद्धार्य
R. 1, 6, 7. समुद्धार्य 44, 60. 3, 24, 10. 4, 44, 105. Hip. 1, 42. समाप्ते ऽर्थे JĀLĀ.
2, 86. उरापे ऽर्थे RAGH. 1, 72. स्वार्थं करिष्यामि N. 4, 17. अवश्यभाविन्यर्थे

BRĀHMAN. 2, 2. तमेव चित्तपन्थम् R. 1, 2, 23. अर्थसंदेह ein zweifelhafter
Fall HIT. 10, 11, v. 1. Steht bisweilen ziemlich müßig da: देशकालार्थद-
र्शिन् M. 8, 157. धर्मार्थप्रभवः neben अधर्मप्रभवः 6, 64. संदेशार्थः Botschaf-
ten MEGH. 5. पुत्रार्थकारणात् R. 1, 13, 22. अपत्यार्थकारणात् 3, 4, 19. गुर्व-
मिहोत्रार्थकते SĀV. 4, 25. — एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थं किञ्चित्सहाचरेत्
er habe auch nicht die geringste Gemeinschaft mit u. s. w. M. 11, 189.
Geschäft, Arbeit; in der Regel mit ३, गम् (einem Geschäft nachgehen,
eine Arbeit treiben): देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासोवीद्विपञ्चतुष्पदित्यै
RV. 1, 124, 1. वी नूनं कद्वा अर्थं गता दिवो न पृथिव्याः habt ihr Etwas zu
thun im Himmel, nicht auf Erden? 38, 1. नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्-
र्थानि कृणवन्नप्यसि 7, 63, 4. दिवे दिवे धुनयो यत्तुर्थम् tagtäglich treiben
die Rauschenden (Flüsse) ihre Arbeit 2, 30, 2. अर्थं ह्यस्य त्रणि 3, 11, 3.
1, 105, 2. 113, 6. 130, 5. 144, 3. 2, 39, 1. 3, 83, 3. 61, 3. 4, 13, 3. 6, 32, 5. 8,
88, 17. 68, 5. 10, 106, 7. 143, 1. AV. 15, 17, 8. m.: एतमर्थं च चिकित्ताकुम्-
भिः RV. 10, 51, 4. अर्थमेतं रथीवाधानमन्वा वरीनुः 6. VS. 18, 15. अरुकर-
र्यत्साधयते ÇAT. Br. 11, 8, 1. तस्माद्यद्यर्थोः शालायामर्थः स्यात् wenn
der A. in der शा° Etwas zu thun hat 3, 6, 2, 20. गृत्समदमर्थमभ्युत्थितम्
Nir. 9, 4. तेनादकार्यान्कुर्वन्ति KAUÇ. 75. — Bemerkenswerth ist die Ver-
bindung mit dem instr.: नो ह्यवर्त्तो व्याप्त्या चनार्थो ऽस्ति der अव°
hat nichts mit der व्या° zu thun ÇAT. Br. 5, 2, 5, 12. एतैर्ह्यत्रोभयैरर्थो भ-
वति (man hat mit Beiden zu thun, man bedarf Beider) यदेवैश्च ब्राह्म-
णैश्च 3, 3, 4, 20. यदि प्राणैरिहार्थो को निवर्तधम् wenn es Euch um's Leben
zuthun ist, so kehret um R. 3, 26, 10. न हि मे जीवितेनार्थो नाप्यर्थेन विभूषणोः
5, 26, 23. को नु मे जीवितेनार्थः N. 12, 65. BHAG. 3, 18. HIT. Pr. 11. अचेत-
नग्रहणेन नार्थः PAT. zu P. 3, 1, 7, VArt. 1. सतामर्थः शिवाचर्या Vor. 3, 10.
Es findet mit diesem instr. auch comp. statt P. 2, 1, 30, Sch. Accent ein-
es solchen comp. 6, 2, 153, Sch. Vgl. अर्थिन् 1. — 7) Begehr, Verlangen,
Bedarf MED. th. 2. यावदर्थं soviel als nöthig ist M. 2, 51 (v. 1.: यावदन्न).
182. — 8) Sinn, Bedeutung, Begriff, Inhalt AK. 3, 4, 88. H. an.
2, 211. MED. th. 2. तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते मकृत्तमनः ÇVETĀÇV.
Up. 6, 23. ते तमर्थमप्युक्ते देवान् M. 2, 152. वेदार्थविद् 3, 186. उदारवक्ता-
र्थपदैः श्लोकशतैः R. 1, 2, 45. विचित्रार्थपदम् आध्यायानम् 4, 28. विमृतार्थ 29.
वागर्थो RAGH. 1, 1. अर्थशब्दो = शब्दार्थो gaṇa राजदत्तादिः विस्पष्टार्थ M.
2, 33. अर्थपुक्त KUMĀRAS. 1, 13. परोनार्थ HIT. Pr. 9. श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्व-
गच्छत् RAGH. 2, 2. P. 1, 2, 56. ईषदर्थे in der Bedeutung von ई° 1, 1, 14,
KĀR. RAGH. 3, 21. In Verbindung mit तन्न vorang. oder folg.: वेदशास्त्रा-
र्थतत्त्वज्ञ M. 12, 102. R. 1, 1, 16. अर्थार्थतत्त्वज्ञ 3, 76, 1. वेदतत्त्वार्थविद् M. 5,
42. 3, 96. अस्य सर्वस्य विधानस्य — कार्यतत्त्वार्थवित् 1, 3. Am Ende eines
adj. comp. häufig durch क्क verstärkt AK. 2, 8, 2, 62. 3, 2, 59. 3, 32. H. 4.
— 9) Art und Weise H. an. 2, 211. — 10) Verbot (निवृत्ति) AK. 3, 4, 88.
H. an. 2, 211. MED. th. 2. — 11) Preis H. 868. Offenbar ein Fehler für
अर्थ. — 12) personif. ein Sohn Dharma's Bṛh. P. in VP. 53, N. 13.
— Vielleicht von अर, also: was man erreicht.

अर्थकर (अ° + क°) adj. f. ई P. 3, 2, 20, Sch. Nutzen bringend, nützlich:
विद्या HIT. Pr. 18.

अर्थकर्मन् (अ° + क°) n. eine die Sache betreffende Handlung, Haupt-
handlung (Gegens. गुणकर्मन्) MADHUS. in Ind. St. 1, 14, 23. 13, 5.

1. अर्थकाम (अ° + का°) die Begierde und der Nutzen, s. u. अर्थ 3.